क्वैस्ट–यू0जी0सी0–एच0आर0डी0सी0, कुमाऊँ विश्वविद्यालय, नैनीताल IndianJournals.com
Volume 9, Issue 1, January-April 2015 : 6-15
DOI : 10.5958/2249-0035.2015.00002.9

शोध पत्र

ब्रह्मा कुमारीज के अव्यक्त वाणी साहित्य में शांति की शक्ति का स्वरुप

हरदीप सिंह
Email id: bkhardeep@yahoo.com

प्रस्तुत शोध पत्र में ब्रह्मा कुमारीज के अव्यक्त वाणी साहित्य में शांति की शक्ति के स्वरुप का विवेचन करके विश्व के सम्मुख शांति की नवीन अवधारणा की स्थापना की गई है। आज विश्व जिस तनाव के माहौल से गुजर रहा है, उसमें सभी राष्ट्र अपनी शांति के लिए बाहरी और अंदरूनी चुनौतियों से जूझ रहे हैं। दुनिया में कहीं आतंकवाद का भय है तो कहीं देश के भीतर की विघटनकारी साम्प्रदायिक शक्तियों का डर है। शांति की शिक्षा का सम्बन्ध युद्ध और आक्रामक रुख से उत्पन्न तनाव, अन्याय, शोषण और मानवाधिकारों के हनन को रोकने से है। (भगबती, 2006) ऐसे समय में ब्रह्मा कुमारीज के अव्यक्त वाणी साहित्य एक लाइट हाउस के समान विश्व में और व्यक्ति के जीवन में शांति स्थापना का मार्ग प्रशस्त कर रहा है। अव्यक्त वाणी साहित्य की आध्यात्मिक चेतना के बल पर ही विश्व के 138 देशों में ओम शांति के मन्त्र के जयघोष द्वारा ब्रह्मा कुमारीज ने गैर–सरकारी संस्था कई रूप में न केवल संयुक्त राष्ट्र संघ से मान्यता प्राप्त की है अपितु उनके सामाजिक एवं आर्थिक मामलों के सलाहकार होने के गौरव भी प्राप्त किया है। इन अव्यक्त वाणियों में मानव को जहाँ अपने आत्मिक स्वरूप का बोध हो जाता है वहीं आत्मा के अनादि गुणों सुख, शांति, पवित्रता, प्रेम, आनंद और शक्ति की गहन अनुभूति होती है। प्रस्तुत पत्र का विषय केवल शांति की शक्ति तक ही सीमित रखा गया है।

1. अव्यक्त वाणी साहित्य की अवधारणा

ब्रह्मा कुमारीज ईश्वरीय विश्वविद्यालय ने 1969 से लेकर 2014 तक लगभग दो हजार अव्यक्त वाणियों वर्ष के हिसाब से अनेक खंडों में प्रकाशन किया है। सन 1975 में अव्यक्त वाणियों के सम्पादक ब्रह्मा कुमार जगदीश ने सम्पादकीय में लिखा है, अव्यक्त वाणियां इस संसार के विवाद तथा इसके माया मोह से सदा ऊपर रहने वाले–आनन्द स्वरूप, शक्ति स्वरूप, शांति स्वरूप एवं प्रेम स्वरूप परमपिता परमात्मा और साथ साथ अव्यक्त प्रजापिता ब्रह्मा की वाणियां हैं, इसलिए इन्हें पढ़ते समय आपको इनमें विशेष मधुरता, परमात्मा प्रेम और आनंद का भी अनुभव होगा (जगदीश, 1975)।

अव्यक्त का अर्थ यह नहीं समझना चाहिए कि इनमें कोई कलिष्ट रहस्य है, अव्यक्त का अर्थ है इस व्यक्त देह से परे रहने वाला परमात्मा, जिसका अपना कोई शरीर नहीं होता क्योंकि परमात्मा का जन्म माँ के गर्भ से नहीं होता, अपितु दिव्य अवतरण होता है। इसमें परमात्मा कुछ समय के लिए एक शरीर का आधार लेते हैं। ब्रह्मा कुमारीज संस्था में ब्रह्मा कुमारी राजयोगिनी दादी गुलजार जी के शरीर के माध्यम का आधार लेकर परमात्मा इन वाणियों का उच्चारण करते हैं। इसकी पुष्टि भारत के पूर्व राष्ट्रपति डॉक्टर अब्दुल कलाम की पुस्तक *इगनाइटेड माइण्ड्स* में उनके इस कथन से होती है कि अपने माऊंट आबू के निवास के दौरान मैं दादी गुलजार जी के तन में एक दैवी शक्ति को मिला। उस समय उनके साथ भारत को दो अन्य वैज्ञानिक भी थे (कलाम, 2002)। परमात्म महावाक्य होने के कारण इन्हें पढ़ते समय एक अद्भुत आत्मिक सुख का अनुभव होता है और यह महसूस होता है कि एक अलौकिक शक्ति का संचार हो रहा है और हम दिव्यता की ओर अग्रसर होते हैं। इनमें दिव्य गुणों की धारणा के लिए

परा स्नातक हिंदी विभाग, सतीश चन्द्र धवन सरकारी कालेज, लुधियाना

तथा संस्कारों की शुद्धिकरण के लिए ऐसे शक्तिशाली एवं सहज उपाय बताए गए हैं जैसे आजतक किसी ने नहीं बताए। इनमें पवित्रता, दिव्यता, नैतिकता अथवा महानता की जो स्थिति प्राप्त करने की प्रेरणा दी गई है उसे प्रायः लोग दुष्प्राप्य मानते रहे हैं। परन्तु इन वाणियों के पढ़ने से लगता है कि ये तो वास्तव में हमारे अपने ही आदिम स्वरूप का बोध कराती हैं। इन्हें आत्मसात करना वास्तव में उतना कठिन नहीं है, जितना प्रायः माना जाता है। इन वाणियों में प्रचुर मात्रा में नई प्रेरणाएं, नए दृष्टिकोण और नए ज्ञान बिंदु उपलब्ध होते हैं। परमपिता परमात्मा की यही विशेषता है कि वे किसी एक विषय पर भी हर बार तत्क्षण ही नए, उच्च और प्रेरणादायक महावाक्य उच्चारण करते हैं।

इन वाणियों में आत्मा के बहुमुखी विकास के लिए विशाल सामग्री है। ये वाणियां आत्मा के लिए शक्तिप्रद, स्वास्थ्यप्रद, प्रकाशप्रद, शान्तिप्रद, आनंदप्रद और सर्व लाभप्रद वरदान की तरह हैं जिन्हें बार बार पढ़ने को मन करता है। वास्तव में अव्यक्त वाणियां परमपिता परमात्मा का आत्माओं के साथ बाप, शिक्षक और सतगुरु एवं सर्व सम्बन्धों के रूप में संवाद है। इस संवाद की कुछ बानगियाँ प्रस्तुत हैं

1. आज स्नेह के सागर बाप अपने स्नेही बच्चों को देख रहे हैं। (अव्यक्त बापदादा, 19–12–1983)
2. आज विधाता वरदाता बाप अपने चरों ओर के अति स्नेही सेवाधारी बच्चों को देख रहे हैं। (अव्यक्त बापदादा, 21.12.83)
3. आज बड़े ते बड़ा बाप बड़े ते बड़े बच्चों को बड़े दिन की बधाई दे रहे हैं। (अव्यक्त बापदादा, 25.01.83)
4. आज विश्व रचता बाप विश्व की परिक्रमा लगाते हुए अपने मिलन स्थान पर बच्चों की रूहानी महफिल में पहुँच गए हैं। (अव्यक्त बापदादा, 27.12.83)
5. आज सागर के कंठे पर अर्थात मधुबन के कंठे पर मधुर मिलन मनाने के लिए माशूक अपने रूहानी आशिकों से मिलने आए हैं। (अव्यक्त बापदादा, 31. 12.83)
6. सभी अपने को विधाता बाप द्वारा विधि और विधान को जानने वाले समझते हो? विधि और विधान को जानने वाले हर संकल्प और हर कर्म में सिद्धि स्वरूप होते हैं, ऐसे अपने को अनुभव करते हो (अव्यक्त बापदादा, 03.10.75)
7. बाप समान निराकारी, देह की स्मृति से न्यारे, आत्मिक स्वरूप में स्थित होते हुए, साक्षी होकर, अपना और सर्व आत्माओं का पार्ट देखने का अभ्यास मजबूत होता जाता है (अव्यक्त बापदादा, 10.10.75)
8. आज बापदादा विश्व की तकदीर बनाने वाले तकदीरवान बच्चों की तस्वीर देख रहे हैं। (अव्यक्त बापदादा, 10. 10.75)

अव्यक्त वाणियों की भाषा अलौकिक और एक प्रकार से विविध भाषा संगम है। इसमें केवल भारत की ही भाषाओं के शब्द नहीं बल्कि अंग्रेजी भाषा के भी आम बोलचाल के शब्द हैं जिनका विचित्र परन्तु नया प्रयोग किया गया है। इस भाषा का अपना एक विशेष रस है।

2. अव्यक्त वाणियों में शांति की शक्ति

अव्यक्त वाणियों में मानव को सर्वश्रेष्ठ, सर्वगुण सम्पन्न, मर्यादा पुरुषोत्तम और सोलह कला सम्पूर्ण बनाने के अनेक विषयों पर नवीन, सहज, लेकिन गहन गंभीर और महीनता में जाकर ऐसी व्याख्या की गई है कि व्यक्ति को अब तक मुश्किल समझी जाने वाली आध्यात्मिकता आसान बात लगने लगी है। ये अव्यक्त वाणियाँ जीवन में एक नया उल्लास और नई तरंग लाने वाली हैं। आध्यात्मिक पुरुषार्थ के हर पहलु पर उनमें कोई न कोई अत्यंत उपयोगी बात कही गई है जिससे कि जीवन को महान बनाने के लिए बहुत बल मिलता है। आत्मा के पांच मूलभूत या मौलिक पांच गुण हैं– ज्ञान, शांति, सुख, पवित्रता, प्रेम व् आनन्द। यह आलेख केवल शान्ति की शक्ति पर ही केन्द्रित है, यही इस आलेख की सीमा भी है। शांति की शक्ति को साईलेंस पावर भी कहा गया है।

दुनिया का हर आदमी शांति चाहता है। शांति की चाहना

का कारण यह है की शांति आत्मा का निजी अनादि गुण है। शांति स्व–स्थिति है, मौलिक गुण है। आत्मिक स्वरूप की स्थिति में इसकी सहज अनुभूति होती है। लेकिन जब व्यक्ति अज्ञानतावश भौतिकतावाद के बोध में जीने लगता है और दैहिक भोग को ही प्रमुख मान लेता है तो उसकी शांति खत्म हो जाती है। वह शांति की तलाश में और अधिक भटकने लगता है। जब उसे रिश्तों में, वस्तुओं में, वैभवों में और सुख–सुविधा के साधनों में के होने पर भी शांति नहीं मिलती तो वह दुखी और असंतुष्ट रहने लगता है। व्यक्ति समाज की और विश्व की इकाई है, इस लिए जब व्यक्ति अशांत होता है तो सारे विश्व की शांति खतरे में पड़ जाती है।

3. शांति की शक्ति का अर्थ

अंग्रेजी की Merriam Webster Dictionary*; में शांति का निम्नलिखित अर्थ है :

1. यह शांति अथवा चुप्पी की स्थिति है जैसे

   क–उपद्रव से मुक्ति

   ख–सुरक्षा की स्थिति या किसी समुदाय को कानून द्वारा प्रदान की गई व्यवस्था
2. बेचैनी या दमनकारी विचारों या भावों से छुटकारा
3. व्यक्तिगत संबंधों में तालमेल
4. क– किसी खास स्थिति या कालावधि के लिए सरकारों के बीच समझौता

   ख– यह उन लोगों के बीच शत्रुता समाप्त करने के लिए एक समझौता है जो परस्पर युद्ध करते रहे हैं।
5. स्वागत या विदाई के अवसर पर शांत या चुप रहने के लिए किया गया आग्रह–

मानव मूल्यपरक शब्दावली का विश्वकोश (मैनी, 2005, 1756) में शांति का अर्थ इस प्रकार है :

शम में कितने के योग से बना शब्द– वेग, क्षोभ या क्रिया का अभाव, स्थिरता, सन्नाटा, नीरवता, स्वस्थता, चैन, संतोष, युद्धावसान, समाप्ति आदि।

शांति के समानार्थी शब्द हैं– अक्षोभ, स्थिरता, निर्वाण, धीरज, विश्राम, आनन्द, अनुत्तेजना, संतोष, गंभीर, नीरवता, वैराग्य।

लेकिन अव्यक्त वाणियों में शांति की शक्ति का निम्नलिखित अर्थ बताया है :

कैसी भी परिस्थिति हो, वातावरण हो, वायुमंडल हो या प्रकृति का तूफान हो लेकिन इन सबके होते हुए, देखते हुए, सुनते हुए, महसूस करते हुए जितना ही बाहर का तूफान हो उतना स्वयं अचल, अटल, शांत स्थिति में स्थित हो सकते हो। शांति में शांत रहना बड़ी बात नहीं है, लेकिन अशांति के वातावरण में शांत रहना इसको ही ज्ञानस्वरूप, शक्तिस्वरूप, याद्स्वरूप और सर्वगुण स्वरूप कहा जाता है। (अव्यक्त बापदादा, 23.5.74)

एक अन्य वाणी में लिखा है :

आप सब शांति को स्वधर्म मानते हो न, यह सभी को बताते हो न! धर्म के लिए क्या गया हुआ है?– धरत पड़िये, धर्म न छोड़िये। सिर जावे लेकिन धर्म न जाये।' तो सुख–शांति के वर्से के अधिकारी कभी शांति को छोड़ नहीं सकते। ऐसे अशांत को शांत बनाने वाले, सदा शांति

*1: A state of tranquillity or quiet: as
a: freedom from civil disturbance
b: A state of security or order withinA community provided for by law or custom <a breach of the peace>
2: freedom from disquieting or oppressive thoughts or emotions
3: harmony in personal relations
4: a: A state or period of mutual concord between governments
b: A pact or agreement to end hostilities between those who have been at war or in A state of enmity
5: used interjectionally to ask for silence or calm or asA greeting or farewell

की किरणें स्वयं द्वारा औरों को देने वाले, कुछ भी हो जाए लेकिन शांति का धर्म, शांति का अधिकार छोड़ नहीं सकते (अव्यक्त, बापदादा, 01.12.83)

इसे एक कहानी के माध्यम से समझा जा सकता है– एक संत की पत्नी अत्यंत झगड़ालू और कर्कशा थी। वह स्नान कर आवे, पत्नी उस पर कूड़ा डाल दे। वह चुपचाप फिर चले जाएँ, स्नान कर आवें, फिर कूड़ा डाले। इस प्रकार उन्होंने ग्यारह बार स्नान किया। इस बार पत्नी ने कूड़ा नहीं डाला शायद थक और ऊब गई हो। प्रत्यक्षदर्शी मित्र ने कहा– ऐसी पत्नी को जला देना चाहिए।' संत बोले, हरगिज नहीं उसी ने मेरे धैर्य को पक्का बनाया है, सहने की शक्ति बढाई है। वह मेरी गुरु है। ऐसी स्थिति में भी जो स्थिर है, अविचल है, निष्कम्प दीपशिखा– सा वही शांत है। इस तरह निंदा–स्तुति, मान–अपमान, जय–पराजय, सुख–दुःख आदि में समान स्थिति में रहने वाला ही शांत कहा जाएगा।

4. शांति की आवश्यकता

वर्तमान समय पूरा विश्व अशांति की आग में जल रहा है। सत्ता और धन के लालच में लगभग सभी ग्रसित हैं। सब पर मौत मंडरा रही है और उसके चलते अपार अशांति है। अब अशांति से लोग इतने तबाह हैं कि शांति की खोज में और भी अशांत हो रहे हैं। दंगा हो, फसाद हो, सामूहिक मौत हो– शांति जुलूस चलता है, शांति वार्ता होती है, शांति मिशन बनता है, शांतिदूत भेजे जाते हैं। आज विश्व शांति खतरे में है क्योंकि दुनिया में एक ओर विश्वयुद्ध का खतरा मंडरा रहा है, दूसरी और कई मुल्क आतंकवाद की दहशत से त्रस्त हैं, पता नहीं कब अमेरिका में 9/11 और भारत में मुंबई में ताज जैसा भयानक आतंकवादी हमला हो जाए या कहीं बम विस्फोट हो जाए, तीसरी ओर पर्यावरण असंतुलन के कारण एक अन्य प्रकार का विनाश का खतरा मंडरा रहा है। चौथी और साम्प्रदायिक हिंसा गृह युद्ध जैसी स्थिति पैदा हो सकती हैए चौथी और गरीबी, भूखमरी, अपराध, बलात्कार, नस्सली भेद भाव, या किसी भी रूप में हंगामा, हलचल आदि शांति के लिए एक बड़ा खतरा है। ऐसा लगता है जैसे हम काँटों के जंगल में रह रहे हैं जहाँ चरों ओर कांटे ही कांटे हैं। हर कोई एक दुसरे को कांटे चुभो कर सुख महसूस करने के दीर्घ रोग से ग्रसित है। शांति से तो जैसे दूर–दूर का हमारा नाता टूट गया है। ऐसी स्थिति में शांति की आज उतनी ही तीव्र आवश्यकता है जितने मरणासन्न रोगी को ऑक्सीजन की होती है। जैसे शरीर के लिए श्वांस आवश्यक हैं वैसे ही आत्मा के लिए शांति आवश्यक है।

शांति की आवश्यकता के विषय में अव्यक्त वाणी में लिखा है :

वर्तमान समय विश्व की अधिकांशतः आत्माओं को सबसे ज्यादा आवश्यकता है सच्ची शांति की, अशांति के अनेक कारण दिन प्रतिदिन बढ़ रहे हैं और बढ़ते जायेंगे। अगर स्वयं अशांत न भी होंगे तो औरों के अशांति का वायुमंडल, अशांति के कम्पन उनको भी अपनी तरफ खींचेंगे। चलने में, रहने में, खाने में, कार्य करने में सबसे अशांति का वातावरण शांत अवस्था में बैठने नहीं देगा अर्थात औरों की अशांति का प्रभाव भी आत्मा पर पड़ेगा, अशांति के तनाव का अनुभव बढ़ेगा। ऐसे समय पर आप शांति के सागर के बच्चों की सेवा क्या है? जैसे कहाँ आग लगती है तो शीतल पानी से आग को बुझाकर शीतल बना देते हैं वैसे आप सबका आजकल विशेष स्वरूप मास्टर शांति के सागर का इमर्ज होना चाहिए। मन्सा संकल्पों द्वारा शांत स्वरूप की स्टेज द्वारा चरों और शांति की किरणों को फैलाओ। ऐसा पावरफुल स्वरूप बनाओ जो अशांत आत्माएं अनुभव करें कि सरे विश्व के कोने में यही थोड़ी सी आत्माएं शांति का दान देने वाली मास्टर शांति के सागर हैं। जैसे चारों ओर अंधकार हो और एक कोने में रोशनी जग रही हो तो सबका अटेंशन स्वतः ही रोशनी की ओर जाता है। ऐसे सबको आकर्षण हो कि चरों ओर की अशांति के बीच यहाँ से शांति प्राप्त हो सकती है। शांति स्वरूप के चुम्बक बनों जो दूर से ही अशांत आत्माओं को खींच सको। नयनों द्वारा शांति का वरदान दोए मुख द्वारा शांतस्वरूप की स्मृति दिलाओ, संकल्प द्वारा अशांति के

संकल्पों को मर्ज कर शांति के वायब्रेशन को फैलाओ (अव्यक्त बापदादा, 7.3.81)

5. शांति की शक्ति का महत्व

अव्यक्त वाणियों में शांति की शक्ति के महत्त्व और महानता के विषय में एकदम नये ढंग से कहा गया है:

शांति की शक्ति क्रोध अग्नि को शीतल कर देती है, व्यर्थ सकल्पों को समाप्त कर देती है, कैसे भी पुराने संस्कारों को समाप्त कर देती है, अनेक प्रकार के मानसिक रोग सहज समाप्त कर देती है, शांति के सागर बाप से अनेक आत्माओं का मिलन करा सकती है, अनेक जन्मों से भटकी हुई आत्माओं को ठिकाने की अनुभूति करा सकती है, समय के खजाने में इकानामी करा देती है अर्थात कम समय में ज्यादा सफलता पा सकते हैं, हाहाकार से जयजयकार करा सकती है, आपके गले में सफलता की मालाएं पहनाएगी। (अव्यक्त बापदादा, 13.11.81)

अव्यक्त वाणी का उपर्युक्त उद्धरण शांति की शक्ति की महानता को अनेक संदर्भों को दर्शाता है। क्रोध एक ऐसा विकार है जो बहुत ही खतरनाक है। चाहे पारिवारिक लड़ाई हो, चाहे भारत पाक के बीच तनाव; क्रोध को अग्नि कहा गया है। जैसे आग्नि सब कुछ जला कर खाक कर देती है वैसे ही क्रोध व्यक्ति की सारी ऊर्जा को क्षीण कर देता है। जबकि शांति की शक्ति क्रोध अग्नि को बुझा देती है। ऐसे ही व्यर्थ संकल्प व्यक्ति का माथा खराब कर देते हैं और उसकी शक्ति नष्ट कर डालते हैं। इसका समाधान भी एकमात्र शांति की शक्ति है। कई बार हम अपने पुराने स्वभाव संस्कार के वशीभूत होकर स्वयं भी तंग होते हैं और दूसरों को भी तंग करते हैं। शांति की शक्ति इस पुराने स्वभाव संस्कार को भी समाप्त कर देती है। शांति का आशय कमजोरी नहीं है, बल्कि यदि इसका उपयुक्त प्रयोग किया जाये तो शांति की शक्ति से असंभव समझे जाने वाले कार्य भी सहज ढंग से हो जाते हैं।

इसी वाणी का एक अन्य उदहारण देखिये:

वाणी से तीर चलाना आ गया है, अब शांति का तीर चलाओ जिससे रेत निकाल सकते हो, कितना भी कड़ा सा पहाड़ हो लेकिन पानी निकाल सकते हो। वर्तमान समय में शांति की शक्ति को प्रैक्टिकल में लाओ (वही, 13. 11.81)

इस उदाहरण में शांति की शक्ति का व्यावहारिक प्रयोग पर बल दिया गया है कि शांति की शक्ति के प्रयोग से असम्भव कार्य भी सम्भव महसूस होता है।

व्यक्तिगत जीवन में भी परिवर्तन के लिए निर्णय शक्ति और परखने की शक्ति आवश्यक है उसके लिए भी शांति की शक्ति बहुत जरूरी है। इस सम्बन्ध में इसी अव्यक्त वाणी में कहा गया है :

साइलेंस अर्थात शांत स्वरुप आत्मा एकांतवासी होने के कारण सदा एकाग्र रहती है और एकाग्रता के कारण विशेष दो शक्तियां सदा प्राप्त होती हैं– एक परखने की शक्ति दूसरी निर्णय करने की शक्ति। यही दो शक्तियां व्यवहार और परमार्थ दोनों की सर्व समस्याओं का सहज साधन हैं (अव्यक्त बापदादा, 03.12.79)

6. शांति की शक्ति का प्रयोग

सवाल है कि शांति की शक्ति का प्रयोग कैसे किया जा सकता है? वर्तमान युग हर कोई इस बात का प्रत्यक्ष प्रमाण चाहता है कि जैसे तन को शांत रखने का प्रयोग करते हैं वैसे ही मन के ऊपरए कर्म पर, और सम्बन्ध सम्पर्क में शांति की शक्ति का कितना प्रयोग किया जा सकता है? इस विषय पर अव्यक्त वाणी में निम्नलिखित निर्देश दिया है:

साइलेंस की शक्ति का जितना महत्त्व है, उतना उसे विधिपूर्वक प्रयोग में लाने में अभी कमी है। चाहना बहुत है, नॉलेज भी है लेकिन प्रयोग करते हुए आगे बढ़ते चलो। साइलेंस की शक्ति की महीनता का अनुभव करते स्व प्रति व अन्य प्रति कार्य में लगाना, उसमें और अभी अटेंशन चाहिए। विश्व की आत्माओं और सम्बन्ध सम्पर्क में आने वाली आत्माओं को महसूस हो कि शांति की किरणें इन विशेष आत्माओं द्वारा मिल रही हैं। हरेक में चलता–फिरता

'शांति यज्ञकुंड' अनुभव हो। जैसे आपकी रचना (प्रकृति) में छोटा सा फायरफलाई (जुगनू) दूर से ही अपनी रौशनी का अनुभव कराता है, दूर से ही देखते सब कहेंगे कि यह फायरफलाई आ रहा है, जा रहा है। ऐसे इस बुद्धि द्वारा यह अनुभव करें कि यह शांति का अवतार शांति देने आ गया है। चारों ओर अशांत आत्माएं शांति की किरणों के आधार पर शांति–कुंड की तरफ खिंची हुई आएं। जैसे प्यासा पानी की तरफ स्वतः ही खिंचता हुआ आता है, ऐसे आप शांति के अवतार आत्माओं की तरफ खींचे हुए आएं। इसी शांति की शक्ति का अभी और अधिक प्रयोग करो (अव्यक्त बापदादा, 20.02.83)

शांति की शक्ति कड़े से कड़ी बीमारी की अवस्था में सूली को काँटा बना सकती है इस विषय में गहराई और महीनता के साथ अव्यक्त वाणी में आगे लिखा हैः

शांति की शक्ति वायरलेस से भी तेज आपका संकल्प किसी भी आत्मा प्रति आपका संकल्प पहुंचा सकती है। जैसे साइंस की शक्ति परिवर्तन भी कर लेती है, वृद्धि भी कर लेती है, रचना भी कर लेती है, हाहाकार भी मचा देती है और आराम भी दे देती। लेकिन सायलेंस की शक्ति का विशेष यंत्र है– शुभ संकल्प। इस संकल्प के यंत्र द्वारा जो चाहो वह सिद्धि स्वरूप में देख सकते हो। पहले स्व के प्रति प्रयोग करके देखो। तन की व्याधि के ऊपर प्रयोग करके देखो तो शांति की शक्ति द्वारा कर्म बंधन का रूप मीठे सम्बन्ध के रूप में बदल जाएगा। बंधन सदा कड़वा लगता है, सम्बन्ध मीठा लगता है। यह कर्मभोग, कर्म का कड़ा बंधन साइलेंस की शक्ति से पानी की लकीर मिसल अनुभव होगा। भोगना भोगने वाला नहीं, भोगना भोग रही हूँ यह नहीं लेकिन साक्षी–द्रष्टा हो इस हिसाब किताब का दृश्य भी देखते रहेंगे। इसलिए तन के साथ साथ मन की कमजोरी, डबल बीमारी होने के कारण जो कड़े भोग के रूप में दिखाई देती है। वह अति न्यारा और बाप परमात्माद्व का प्यारा होने के कारण डबल शक्ति अनुभव होने से कर्मभोग के हिसाब–किताब के ऊपर यह डबल शक्ति विजय प्राप्त कर लेगी बीमारी चाहे कितनी भी बड़ी हो लेकिन दुःख व दर्द का अनुबव नहीं करेंगे। जिसको दूसरी भाषा में आप कहते हो 'सूली से कांटे के समान' अनुभव होगा। ऐसे टाइम में प्रयोग करके देखो। इसी प्रकार से तन पर मन पर संस्कारों पर अनुभव करते जाओ और आगे बढ़ते जाओ। यह रिसर्च करो। (अव्यक्त बापदादा, 20.02.83)

शांति का प्रयोग पहले स्वयं पर करना है फिर शांति का अवतार बन जाएंगेः

जैसे बीमारी के समय सिवाए डाक्टर के कोई याद नहीं आता ऐसे अशांति की कोई भी बातों में सिवाए आप शांति–अवतारों के और कोई दिखाई नहीं देगा तो अभी शक्ति सेना, पांडव सेना विशेष शांति की शक्ति का प्रयोग करो (अव्यक्त बापदादा, 20.02.83)

साइंस के साधनों द्वारा समय की दूरी मिट गई है और दूर की आवाज कितनी भी दूर होते समीप हो गयी है। जैसे प्लेन द्वारा समय नजदीक हो गया है, थोड़े समय में कहाँ से कहाँ पहुँच सकते हैं, फोन द्वारा आवाज इतनी समीप हो गयी है कि लन्दन, अमेरिका में बैठे व्यक्ति की आवाज ऐसे सुनाई देती है जैसे सम्मुख खड़े होकर बात कर रहे हैं। ऐसे ही सूचना व प्रौद्योगिकी के साधनों द्वारा कोई भी दृश्य व व्यक्ति दूर होते हुए भी सामने बैठा अनुभव होता है। इस सन्दर्भ में अव्यक्त वाणी कहती है :

साइंस तो आपकी रचना है आप मस्टर रचयिता हो। साइलेंस की शक्ति से आप सब भी विश्व की किसी भी दूर रहने वाली आत्मा का आवाज सुन सकते हो। कौन सा आवाज? साइंस मुख का आवाज पहुँचाने का साधन बन सकती है लेकिन मन का आवाज नहीं पहुंचा सकती। साइलेंस की शक्ति से हर आत्मा के मन का आवाज इतना ही समीप सुनाई देगा जैसे कोई सम्मुख बोल रहा है। आत्माओं के मन में अशांति, दुःख के चित्र ऐसे ही दिखायी देंगे, जैसे टीवी द्वारा दृश्य व व्यक्ति स्पष्ट देखते हो। जैसे इन साधनों का कनेक्शन जोड़ा, स्विच आन करने से स्पष्ट दिखाई और सुनाई देता है। ऐसे ही बाप (परमात्मा) से कनेक्शन जोड़ा, श्रेष्ठ भावना और कामना का स्वीच आन किया तो दूर की आत्माओं को भी समीप अनुभव करेंगे।

इसको कहा जाता है विश्व कल्याणकारी।..... इन सबका आधार है साइलेंस। वर्तमान समय साइलेंस की शक्ति जमा करो (अव्यक्त बापदादा, 20.02.83)।

संकल्प शक्ति बहुत बड़ी शक्ति है। लेकिन श्रेष्ठ शक्ति, शुभ–भावना शुभ–कामना की संकल्प शक्ति, मन बुद्धि को एकाग्र करने की शक्ति को जितना जमा करते जाएँगे उतनी कैचिंग पावर, वायब्रेशन कैच करने की पावर बढती जाती है। जैसे मोबाईल, इन्टरनेट आदि साइंस के साधन काम करते हैं वैसे ही शुद्ध संकल्प का खजाना ऐसा कार्य करेगा जो लन्दन में बैठे हुए किसी भी आत्मा का वायब्रेशन स्पष्ट कैच होगा। साइंस के साधन लाईट के आधार पर चलते हैं वैसे ही यह कैचिंग पावर एकाग्रता की शक्ति से बढती है जिसका आधार आध्यात्मिक लाईट और आत्मिक लाईट है, इस सम्बन्ध में अव्यक्त वाणी में लिखा हैः

साइलेंस की शक्ति के आगे यह साइंस झुकेगी। अभी भी समझते जाते हैं कि साइंस में भी कोई मिसिंग हैं जो भरनी चाहिए। इस लिए बापदादा फिर से अंडरलाइन करा रहा है की अंतिम स्टेज, अंतिम सेवा, यह संकल्प शक्ति बहुत फास्ट सेवा कराएगी। इसी लिए संकल्प शक्ति के ऊपर बहुत अटेंशन दो– बचाओ, जमा करो, बहुत काम में आएगी। प्रयोगी इस संकल्प की शक्ति से बनेंगे। साइंस का महत्त्व क्यों है? प्रयोग में आती है तब सब समझते है? हाँ साइंस अच्छा काम करती है तो साइलेंस की पावर का प्रयोग करने के लिए एकाग्रता की शक्ति चाहिए और एकाग्रता का मूल आधार है मन की कंट्रोलिंग पावर, जिससे मनोबल बढ़ता है (अव्यक्त बापदादा, 15.12.99)

साइंस की शक्ति वाले आवाज को कैच करने का प्रयत्न करते हैं वैसे साइलेंस की शक्ति से अपने दैवीय संस्ति के दैवी संस्कार कैच कर सकते हैं।

आज 21वीं सदी का भटक रहा मानव परमात्म शक्ति, ईश्वरीय शक्ति और साईंलेंस की शक्ति का प्रमाण देखना चाहता है। इसके लिए अव्यक्त वाणी में लिखा हैः

कोई अपकार करे आप एक सैकण्ड में अपकार को उपकार में परिवर्तन कर लो। कोई अपने संस्कार व स्वभाव के रूप में आपके सामने परीक्षा रूप में आये लेकिन आप सैकंड में अपने श्रेष्ठ संस्कार, एक की स्मृति से ऐसी आत्मा के प्रति भी रहमदिल के संस्कार व स्वभाव धारण कर सकते हो। कोई देहधारी– दृष्टि से आपके सामने आए आप एक क्षण में उनकी दृष्टि को आध्यात्मिक दृष्टि में परिवर्तन कर लो। कोई गिराने की वृत्ति से व अपने संग दोष में लेन कि वृत्ति से सामने आये तो आप उसको सदा श्रेष्ठ संग के आधार से उसको भी संग दोष से निकाल श्रेष्ठ संग लगाने वाले बना दो। ऐसी परिवर्तन की युक्ति आने से कब भी हार नहीं खाएंगे। सर्व सम्पर्क में आने वाले आपकी इस सूक्ष्म सेवा पर बलिहार जाएँगे (अव्यक्त बापदादा, 25.5.74)

उपर्युक्त उद्धरण में शांति की शक्ति से हो सकने वाले उस परिवर्तन की बात है जिसकी आज के विश्व में मानव को बहुत आवश्यकता है। हर रोज मीडिया द्वारा सामूहिक दुष्कर्म की घटनाओं के समाचारों से समाज में इतना भय फैल गया है कि अकेली महिला जो घर से बाहर गई है अगर समय पर घर नहीं लौटती तो घर के लोग इस बात से सशंकित हो उठते हैं कि उसके साथ किसी तरह का कोई हादसा न हो गया हो। अमेरिका और यूके जैसी शक्तियां भी कई बार दहशतगर्दों से खौफजदा रहती हैं। भारत के अभी हाल ही में 2013 में हुए मुजफर नगर के दंगे, 2002 में गुजरात में हुई मारकाट, 1984 में हुए सिख विरोधी सुनियोजित कत्लेआम और इस तरह के अनेक उदाहरण मिलते हैं जहाँ बदले की दुर्भावना, सहनशीलता का घोर अभाव के कारण मानवीयता को खून के आंसू बहाने पड़े हैं। उपर्युक्त उद्धरण में एक शब्द आया है– 'देहधारी दृष्टि' इस शब्द का आशय यह है कि अपने वास्तविक आत्मिक स्वरूप कि अज्ञानता के कारण व्यक्ति स्वयं को देह मन कर कर्म करता है। यह एक या अवधारणा है कि मैं एक शरीर हूँ, इसके बहुत खतरे हैं। स्वयं को शरीर मान कर कर्म करने से ही व्यक्ति सबसे पहले स्वयं को पुरुष या स्त्री समझता है जिस कारण मन में काम विकार पैदा होता, इससे ही बलात्कार और दुष्कर्म की घटनाएँ बडने लगी हैं। देहभान के कारण ही व्यक्ति

अपने को एक मानव समझने के बजाय, हिन्दू, मुस्लमान, सिख और इसाई समझ कर जातीय भेदभाव का शिकार बन जाता है। जातीय दंगे भी इसी कारण होते हैं। जनवरी 2014 में दिल्ली में पूर्वोत्तर प्रदेश के *डीनो* की मौत की वजह सिर्फ इतनी थी कि उसके शरीर और बालों की आकृति कुछ भिन्न थी, उसके साथ हुई मारपीट भी देहधारी दृष्टि का ही परिणाम थी। इसलिए जब तक मानव यह नहीं समझ लेता कि मैं इस देह के भीतर रहने वाली एक चौतन्य शक्ति आत्मा हूँ और इस शरीर को चलाने वाली भी मैं आत्मा हूँ, तब तक देह अभिमान के अधार पर किये जाने वाले कार्य भी स्वयं के लिए और दूसरों के लिए घातक सिद्ध दो सकते हैं इसलिए जब तक विश्व की सर्व आत्माओं कि वृत्ति आत्मिक नहीं बन जाती तब तक सर्वे भवन्तु सुखिना कि भावना एक स्वप्न बन कर ही रह जाएगी। बड़े आश्चर्य की बात है कि 21वीं सदी के सूचना प्रौद्योगिकी के इस तूफानी दौर में जब सूचनाओं को समायोजित करना और संभाल कर रखना एक दुष्कर कार्य बन गया है। जब आज का बुद्धिजीवी आधुनिकता, उत्तराधुनिकता, पोस्ट–कोलोनिअल, दलित विमर्श, स्त्री विमर्श, आदिवासी विमर्श में इतना डूबा हुआ है कि अपने आत्मिक स्वरूप के बारे में चिंतन करने के लिए उसके पास समय ही नहीं है। दूसरी बात यह है कि आत्मिक स्वरूप में स्थित होने के लिए क्या करना है इसकी जानकारी भी उसे नहीं है। ब्रह्मा कुमारीज का अव्यक्त वाणी साहित्य मानव जीवन के उस रीतेपन को पूरा करता है जिसकी आवश्यकता जीवन और विश्व में शांति स्थापन करने के लिए अनिवार्य है।

शांति की शक्ति का आधार भी यही आत्मिक स्वरूप की स्मृति और उसमें स्थिति है। दुनिया की महाशक्तियां इस बात से जानी जाती हैं कि उनके पास दुनिया का विनाश करने के कितने साधन मौजूद हैं, आणविक अस्त्र और शस्त्र कितने हैं, साइंस की शक्ति कितनी है। ऐसा लगने लगा है जैसे के दुनिया में विनाश के लिए एक होड़ लगी हुई है। इस सम्बन्ध में अव्यक वाणी में लिखा हैः

जैसे विनाशकारी आत्माएं विनाश के लिए तड़पती हैं, क्या ऐसे ही आप स्थापना वाले विश्व कल्याण के लिए तड़पते हो, ऐसे सेल्फ सर्विस और विश्व सर्विस इन दोनों के लिए नए नये इन्वेंशन निकलते हों? जैसे वे लोग अभी इन्वेंशन निकल रहे हैं कि ऐसे पावरफुल यंत्र बनायें जो विनाश सहज और शीघ्र हो जाये तो क्या ऐसे आप महावीर साईलेंस की शक्ति के इन्चेन्टर' ऐसे प्लान बना रहे हो जो सारे विश्व को परिवर्तन होने में अथवा उसे मुक्ति और जीवन मुक्ति देने में सिर्फ एक क्षण ही लगे और सहज भी हो जाये। ... तो ऐसी रिफाईन इन्वेंशन से एक क्षण में नजर से निहाल, एक क्षण में दुखी से सुखी, निर्बल से बलवान और अशांति से शांति का अनुभव करा सको। (अव्यक्त बापदादा, 15.7.83)

साईलेंस की शक्ति से व्यर्थ को समर्थ में परिवर्तन करने के सम्बन्ध में अवयक्त वाणी में लिखा हैः

जैसे आजकल साईन्स वाले साईंस की नालेज के आधार पर कैसे भी दुःख के समय एक इंजेक्शन द्वारा अल्पकाल के रेस्ट का अनुभव करते हैं न वैसे ही कितनी भी आवाज और कितना भी तमोगुणी वातावरण क्यों न हो, लेकिन साईलेंस की शक्ति से वेस्ट (व्यर्थ) समाप्त होने के कारण बैस्ट (श्रेष्ठ) स्थिति में स्थित होने से सदा रेस्ट (आराम) अनुभव करेंगे अर्थात सदा अपने को सुख और शांति की शैया पर आराम करता अनुभव करेंगे। जैसे यादगार का चित्र भी है सागर में जहाँ लहरों की हलचल होती है तो सागर में होते हुए, साँपों की शैया होते हुए भी अर्थात वातावरण व परिस्थिति दुखमय होते हुए भी आराम का अनुभव करेंगे। इसका भाव यह है कि ऐसी परिस्थितयां और ऐसा वातावरण जो काटने वाला हो, हिलाने वाला हो और अपने विष द्वारा मूर्छित करने वाला हो लेकिन ऐसे वातावरण को भी सुख शांति की शैया बना दे अर्थात आराम का स्थान बना दे अर्थात आत्मा सदा अपने रेस्ट में रहे। तो जैसा यादगार का चित्र है क्या वैसे ही प्रैक्टिकल जीवन में अनुभव करते हो, शीतलता में शीतल रहना कोई बड़ी बात नहीं है, आराम के साधनों में आराम से रहना वह भी साधारण बात है लेकिन बे–आरामी में आराम से रहना इसको कहा जाता है पदापदम भाग्यशाली। तो ऐसे विषय

सागर के बीच रहते हुए पांच विकारों को अपने आराम व सुख और शांति की शय्या बनाना है। (अव्यक्त बापदादा, 23.9.73)

यही शांति की शक्ति है। इसमें विष्णु को सागर में शेष शैय्या पर लेटे हुए उनके चित्र के आधार पर शांति की शक्ति का नवीन प्रयोग और शांति की स्थिति को विष्णु के बिम्ब के माध्यम से सहज लेकिन बहुत ही असरदार तरीके से व्यक्त किया है। बात एक सामान्य व्यक्ति की समझ में आ जाती है। इसकी अंतिम पंक्ति में स्पष्ट है की 'विषय सागर के बीच रहते हुए' अर्थात विश्व वर्तमान समय विषय–विकारों का सागर बना हुआ है। जहाँ सर्वाधिक विकारों की प्रबलता है। लेकिन शांति की शक्ति से 'पांच विकारों को अपने आराम व सुख और शांति की शय्या बनाना है' अर्थात विकारों का रूप बदल देना है जैसे काम विकार को शुभ भावना में, क्रोध को सहनशक्ति में, लोभ को अनासक्ति में, मोह को शुद्ध आत्मिक प्रेम में, और अहंकार को निरहंकारिता में परिवर्तन करके अपने आराम, सुख और शांति की शैय्या बना देना है। यह शांति की शक्ति से ही सम्भव है।

साईलेंस की शक्ति का मूल आधार है डिवाईन इनसाईट। शांति की शक्ति के आधार के विषय के अव्यक्त वाणियों में लिखा है कि साइंस का मूल आधार है लाईट ऐसे ही शांति की शक्ति का आधार है डिवाईन इनसाईट। जितनी बुद्धि शुद्ध और दिव्य बनेगी उतनी शांति की शक्ति भी जमा होगी। शांति की शक्ति का दूसरा आधार है त्रिकालर्शीपन की स्मृति अर्थात हर बात को तीनों कालों से देखो कि क्या बात है, वर्तमान रूप क्या है, क्या पहले भी इस रूप में आई थी और अब जो बात आई है उसको समाप्त कैसे करना है तो तीनों को देखने से कभी भी माया का वार आपको हार नहीं दिला सकता। त्रिकालदर्शी स्थिति में स्थित रहने से कभी माया वार नहीं कर सकती।

शांति प्यारी क्यों लगती है क्योंकि आत्मा का स्वधर्म ही शांत है। कभी भी कोई हलचल होती है, हल्ला–गुल्ला कुछ भी होता है तो एक दो को कहा जाता है कि शांत हो जाओ क्योंकि शांति में आराम है। इस लिए आत्मा भी जब अपने शांति के स्वधर्म में टिक जाती है तो उसे आराम मिलता है। यदि विश्व की सर्व आत्माएं अपनी शांति के स्वधर्म में टिक जाएं तभी विश्व में शांति हो सकेगी।

निष्कर्ष

ब्रह्मा कुमारीज के अव्यक्त वाणी साहित्य में शांति की शक्ति के उपर्युक्त संक्षिप्त विवेचन से शांति का जो स्वरुप स्पष्ट होता है उससे यह निष्कर्ष निकलते हैं–

1. साईन्स का मूल आधार है लाईट ऐसे ही शांति की शक्ति का आधार है डिवाईन इनसाईट। जितनी बुद्धि शुद्ध और दिव्य बनेगी उतनी शांति की शक्ति भी जमा होगी।
3. सायलेंस की शक्ति का विशेष यंत्र है, शुभ संकल्प।
4. साइलेंस की शक्ति से हर आत्मा के मन का आवाज इतना ही समीप सुनाई देगा जैसे कोई सम्मुख बोल रहा है। आत्माओं के मन में अशांति, दुःख के चित्र ऐसे ही दिखायी देंगे, जैसे टीवी द्वारा दृश्य व व्यक्ति स्पष्ट देखते हो।
5. विषय सागर के बीच रहते हुए पांच विकारों को अपने आराम व सुख और शांति की शय्या बनाना है।
6. साइलेंस की शक्ति के आगे यह साइंस झुकेगी।
7. शांति वह स्थिति है जिसमें कोई चाहे कुछ भी करे हमारा मन अशांत नहीं हो सकता। चाहे कोई हमारा अपमान करे, चाहे कोई हमारा विरोध करेए उसके प्रति भी मन में घृणा की उत्पत्ति नहीं होगी, हमारा मन और बुद्धि हलचल में नहीं आएगा, हम अपनी शांत स्वरूप की स्थिति में अचल और अडोल रहेंगे।

इससे यह सिद्ध हो जाता है कि वर्तमान विश्व को जिस शांति की आवश्यकता है वह इन वाणियों के अध्ययन से सम्भव है। आज विश्व एक चिंताजनक दौर से गुजर रहा है। विश्व के सामने जितने भी संकट हैं उनका निपटारा शांति की शक्ति से ही सम्भव है। शांति की इस शक्ति से जहाँ व्यक्तिगत जीवन में पारिवारिक व सामाजिक रिश्तों

में शांति आएगी वहाँ वैश्विक स्तर पर भी शांति स्थपित होना सम्भव होगा।

सन्दर्भ

- अव्यक्त बापदादा, अव्यक्त वाणी, माउंट आबू, ब्रह्मा कुमारीज, 19.12.1983
- अव्यक्त बापदादा, अव्यक्त वाणी, माउंट आबू, ब्रह्मा कुमारीज, 21.12.1983
- अव्यक्त बापदादा, अव्यक्त वाणी, माउंट आबू, ब्रह्मा कुमारीज, 25.1.1983
- अव्यक्त बापदादा, अव्यक्त वाणी, माउंट आबू, ब्रह्मा कुमारीज, 27.12.1983
- अव्यक्त बापदादा, अव्यक्त वाणी, माउंट आबू, ब्रह्मा कुमारीज, 31.12.1983
- अव्यक्त बापदादा, अव्यक्त वाणी, माउंट आबू, ब्रह्मा कुमारीज, 3.10.1975
- अव्यक्त बापदादा, अव्यक्त वाणी, माउंट आबू, ब्रह्मा कुमारीज, 12.10.1975
- अव्यक्त बापदादा, अव्यक्त वाणी, माउंट आबू, ब्रह्मा कुमारीज, 15.12.1999
- अव्यक्त बापदादा, अव्यक्त वाणी, माउंट आबू, ब्रह्मा कुमारीज, 23.5.1974
- अव्यक्त बापदादा, अव्यक्त वाणी, माउंट आबू, ब्रह्मा कुमारीज, 15.7.1973
- अव्यक्त बापदादा, अव्यक्त वाणी, माउंट आबू, ब्रह्मा कुमारीज, 23.9.1973
- अव्यक्त दादा, अव्यक्त वाणी, माउंट आबू, ब्रह्मा कुमारीज, 23.10.1975
- कलाम, अब्दुल, इगनाइटीड माइंड्स अनलीशिंग द पावर विदिन इण्डिया, पेंग्विन बक्स इण्डिया, प्रा0लिमिटेड, नई दिल्ली, 2002
- जगदीश (सं0), अव्यक्त वाणी, माउंट आबू, ब्रह्मा कुमारीज, 1975
- भगबती, नीलिमा, पीस एजुकेशन फार सस्टेनेबल डेवलपमेंट, रोल आफ हायर एजुकेशनए पेपर प्रेजेन्टेड एट 10 ए, पी ई आई डी यूनेस्को, बैंकाक 6–8 दिसम्बर, 2006
- मैनी, धर्मपाल (सं0), मानवमूल्यपरक शब्दावली का विश्वकोश, खंड चतुर्थ, पृष्ठ 1976, नई दिल्ली, स्वरूप एंड सन्स, 2005